الجزء ١٠

وَ اعۡلَمُوۡۤا اَنَّمَا غَنِمۡتُمۡ مِّنۡ شَیۡءٍ
فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوۡلِ وَلِذِی
الۡقُرۡبٰی وَ الۡیَتٰمٰی وَ الۡمَسٰكِیۡنِ وَ ابۡنِ
السَّبِیۡلِ ۙ اِنۡ كُنۡتُمۡ اٰمَنۡتُمۡ بِاللّٰهِ وَ
مَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰی عَبۡدِنَا یَوۡمَ الۡفُرۡقَانِ
یَوۡمَ الۡتَقَی الۡجَمۡعٰنِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ
شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۴۱﴾

41. और जान लो कि जो कुछ माले ग़नीमत तुमने पाया हो तो उसका पाँचवां हिस्सा अल्लाहके लिए और रसूल (ﷺ) के लिए और (रसूल ﷺ के) क़राबत दारों के लिए (है) और यतीमों और मोह्ताजों और मुसाफ़िरों के लिए है। अगर तुम अल्लाह पर और उस (वह़ी) पर ईमान लाए हो जो हमने अपने (बर गुज़ीदह) बंदे पर (ह़क़्क़ो बातिल के दरमियान) फ़ैसले के दिन नाज़िल फ़रमाई वोह दिन (जब मैदाने बद्र में मोमिनों और काफ़िरों के) दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए थे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اِذۡ اَنۡتُمۡ بِالۡعُدۡوَةِ الدُّنۡیَا وَ هُمۡ
بِالۡعُدۡوَةِ الۡقُصۡوٰی وَالرَّكۡبُ اَسۡفَلَ
مِنۡكُمۡ ؕ وَلَوۡ تَوَاعَدۡتُّمۡ لَاخۡتَلَفۡتُمۡ
فِی الۡمِیۡعٰدِ ۙ وَ لٰكِنۡ لِّیَقۡضِیَ اللّٰهُ
اَمۡرًا كَانَ مَفۡعُوۡلًا ۬ۙ لِّیَهۡلِكَ مَنۡ
هَلَكَ عَنۡۢ بَیِّنَةٍ وَّ یَحۡیٰی مَنۡ حَیَّ
عَنۡۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیۡعٌ
عَلِیۡمٌ ۙ ﴿۴۲﴾

42. जब तुम (मदीना की जानिब) वादी के क़रीबी किनारे पर थे और वोह (कुफ़्फ़ार दूसरी जानिब) दूरवाले किनारे पर थे और (तिजारती) क़ाफ़ला तुमसे नीचे था, और अगर तुम आपसमें (जंग के लिए) कोई वा'दा कर लेते तो ज़रूर (अपने) वा'दे से मुख़्तलिफ़ (वक़्तों में) पहुंचते लेकिन (अल्लाहने तुम्हें बिग़ैर वा'दा एक ही वक़्त पर जमा' फ़रमा दिया) येह इस लिए (हुआ) कि अल्लाह उस काम को पूरा फ़रमा दे जो हो कर रेहनेवाला था ताकि जिस शख़्स को मरना है वोह ह़ुज्जत (तमाम होने) से मरे और जिसे जीना है वोह ह़ुज्जत (तमाम होने) से जिए। (या'नी हर किसी के सामने इस्लाम और रसूले बर ह़क़ (ﷺ) की सदाक़त पर ह़ुज्जत क़ाइम हो जाए), और बेशक अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

اِذۡ یُرِیۡكَهُمُ اللّٰهُ فِیۡ مَنَامِكَ قَلِیۡلًا ؕ
وَ لَوۡ اَرٰىكَهُمۡ كَثِیۡرًا لَّفَشِلۡتُمۡ
وَلَتَنَازَعۡتُمۡ فِی الۡاَمۡرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِیۡمٌۢ بِذَاتِ

43. (वोह वाक़िआ़ याद दिलाइए) जब आपको अल्लाहने आपके ख़्वाब में उन काफ़िरों (के लश्कर) को थोड़ा) कर के दिखाया था और अगर (अल्लाह) आपको वोह ज़ियादा कर के दिखाता तो (ऐ मुसलमानो!) तुम हिम्मत हार जाते और तुम यक़ीनन उस (जंग के) मुआ़मले में बाहम झगड़ने लगते लेकिन अल्लाहने (मुसलमानों को

الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

बुज़्दिली और बाहमी निज़ाअ् से) बचा लिया। बेशक वोह सीनों की (छुपी) बातों को खूब जाननेवाला है।

وَ اِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ
اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّ يُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ
اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ
مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾

44. और (वोह मंज़र भी उन्हें याद दिलाइये) जब उसने उन काफ़िरों (की फ़ौज) को बाहम मुक़ाबले के वक़्त (भी महज़) तुम्हारी आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखाया और तुम्हें उनकी आँखों में थोड़ा दिखलाया (ताकि दोनों लश्कर लड़ाई में मुस्तइद रहें) येह इस लिए कि अल्लाह उस (भरपूर जंगके नतीजे में कुफ़्फ़ार की शिकस्ते फ़ाश के) अम्र को पूरा कर दे जो (इन्दल्लाह) मुक़र्रर हो चुका था, और (बिल आख़िर) अल्लाह ही की तरफ़ तमाम काम लौटाए जाते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ
فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. ऐ ईमानवालो! जब (दुश्मन की) किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहा करो और अल्लाह को कसरत से याद किया करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا
تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ
رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की इताअ्त करो और आपस में झगड़ा मत करो वरना (मुतफ़र्रिक़ और कमज़ोर हो कर) बुज़्दिल हो जाओगे और (दुश्मनों के सामने) तुम्हारी हवा (या'नी क़ुव्वत) उखड़ जाएगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ
دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّ رِئَآءَ النَّاسِ
وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾

47. और ऐसे लोगों की तरह् न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को दिखलाते हुए निकले थे और (जो लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते थे, और अल्लाह उन कामों को जो वोह कर रहे हैं (अपने इल्मो क़ुदरत के साथ) इहाता किए हुए है।

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ

48. और जब शैतानने उन (काफ़िरों) के लिए उनके आ'माल खुशनुमा कर दिखाए और उसने (उनसे) कहा : आज लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब नहीं (हो सक्ता)

النَّاسِ وَاِنِّیْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا
تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰی
عَقِبَیْهِ وَقَالَ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّنْكُمْ
اِنِّیْٓ اَرٰی مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّیْٓ اَخَافُ
اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۴۸﴾ ع ۶ ۴ ۲

और बेशक मैं तुम्हें पनाह देनेवाला (मददगार) हूं। फिर जब दोनों फ़ौजोंने एक दूसरे को (मुक़ाबिल) देख लिया तो वोह उलटे पाँव भाग गया और केहने लगा : बेशक मैं तुमसे बेज़ार हूं। यक़ीनन मैं वोह (कुछ) देख रहा हूं जो तुम नहीं देखते बेशक मैं अल्लाह से डरता हूं, और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

اِذْ یَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِیْنَ فِیْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِیْنُهُمْ ؕ
وَمَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَی اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۴۹﴾

49. और (वोह वक़्त भी याद करो) जब मुनाफ़िक़ीन और वोह लोग जिनके दिल में (कुफ़्र की) बीमारी है केह रहे थे कि उन (मुसलमानों) को उनके दीनने बड़ा मग़रूर कर रखा है, (जबकि ह़क़ीक़ते हाल येह है कि) जो कोई अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो (अल्लाह उसके जुमला उमूर का कफ़ील हो जाता है) बेशक अल्लाह बहुत ग़ालिब बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَلَوْ تَرٰٓی اِذْ یَتَوَفَّی الَّذِیْنَ كَفَرُوا ۙ
الْمَلٰٓئِكَةُ یَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ
اَدْبَارَهُمْ ۚ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ
الْحَرِیْقِ ﴿۵۰﴾

50. और अगर आप (वोह मंज़र) देखें (तो बड़ा तअ़ज्जुब करें) जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान क़ब्ज़ करते हैं वोह उनके चेहरों और उनकी पुश्तों पर (हथोड़े) मारते जाते हैं और (केहते हैं कि दोज़ख़ की) आग का अ़ज़ाब चख लो।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْكُمْ وَ اَنَّ
اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۵۱﴾ ۙ

51. येह (अ़ज़ाब) उन (आ'माले बद) के बदले में है जो तुम्हारे हाथोंने आगे भेजे और अल्लाह हरगिज़ बंदों पर ज़ुल्म फ़रमानेवाला नहीं।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ
فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ قَوِیٌّ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۲﴾

52. (उन काफ़िरों का ह़ाल भी) क़ौमे फ़िरऔ़न और उनसे पेहले के लोगों के ह़ाल के मानिन्द है। उन्होंने (भी) अल्लाहकी आयात का इन्कार किया था, सो अल्लाहने उन्हें उनके गुनाहों के बाइस (अ़ज़ाब में) पकड़ लिया। बेशक अल्लाह क़ुव्वतवाला सख़्त अ़ज़ाब देनेवाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ یَكُ مُغَیِّرًا

53. येह (अ़ज़ाब) इस वजह से है कि अल्लाह किसी ने'मत को हरगिज़ बदलनेवाला नहीं जो उसने किसी क़ौम

نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۳﴾

पर अरज़ानी फ़रमाई हो यहां तक कि वोह लोग अज़ खुद अपनी ह़ालते ने'मत को बदल दें (या'नी कुफ़राने ने'मत और मा'सियतो नाफ़रमानी के मुर्तकिब हों और फिर उनमें एह़सासे ज़ियां भी बाक़ी न रहे तब वोह क़ौम हलाकतो बरबादी की ज़दमें आ जाती है) बेशक अल्लाह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۵۴﴾

54. येह (अ़ज़ाब भी) क़ौमे फ़िरअ़ौन और उनसे पहले के लोगों के दस्तूर के मानिन्द है, उन्होंने (भी) अपने रबकी निशानियों को झुटलाया था सो हमने उनके गुनाहों के बाइ़स उन्हें हलाक कर डाला और हमने फ़िरअ़ौनवालों को (दरियामें) ग़र्क़ कर दिया और वोह सब के सब ज़ालिम थे।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۵﴾ ۚ

55. बेशक अल्लाहके नज़दीक सब जानवरों से (भी) बदतर वोह लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया फिर वोह ईमान नहीं लाते।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّ هُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۶﴾

56.येह (वोह) लोग हैं जिनसे आपने (बारहा) अ़हद लिया फिर वोह हर बार अपना अ़हद तोड़ डालते हैं और वोह (अल्लाहसे) नहीं डरते।

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

57. सो अगर आप उन्हें (मेदाने) जंग में पा लें तो उनके इ़ब्रतनाक क़त्ल के ज़रीए उनके पिछलों को (भी) भगा दें ताकि उन्हें नसीह़त ह़ासिल हो।

وَ اِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ ع ۷ ۱۰ ۳

58. और अगर आपको किसी क़ौम से ख़यानत का अंदेशा हो तो उनका अ़हद उनकी तरफ़ बराबरी की बुन्याद पर फेंक दें। बेशक अल्लाह दग़ाबाजों को पसंद नहीं करता।

وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

59. और काफ़िर लोग इस गुमान में हरगिज़ न रहें कि वोह (बच कर) निकल गए। बेशक वोह (हमें) आ़जिज़

नहीं कर सक्ते।

سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿۵۹﴾

60. और (ऐ मुसलमानो!) उनके (मुक़ाबले के) लिए तुमसे जिस क़दर हो सके (हथियारों और आलाते जंग की) क़ुव्वत मुहय्या कर रखो और बंधे हुए घोड़ों की (खेप भी) इस (दिफ़ाई तैयारी) से तुम अल्लाहके दुश्मन और अपने दुश्मन को डराते रहो और उनके सिवा दूसरों को भी जिन (की छुपी दुश्मनी) को तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ (भी) अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे तुम्हें उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और तुमसे ना इन्साफ़ी न की जाएगी।

وَ اَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّ مِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَ عَدُوَّكُمْ وَ اٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۶۰﴾

61. और अगर वोह (कुफ़्फ़ार) सुलह़के लिए झुकें तो आप भी उसकी तरफ़ माइल हो जाएं और अल्लाह पर भरोसा रखें। बेशक वोही ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

وَ اِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۱﴾

62.और अगर वोह चाहें कि आपको घोका दें तो बेशक आपके लिए अल्लाह काफ़ी है, वोही है जिसने आपको अपनी मदद केज़रीए और अह्ले ईमान के ज़रीए ताक़त बख़्शी।

وَ اِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۲﴾

63. और (उसीने) उन (मुसलमानों) के दिलों में बाहमी उल्फ़त पैदा फ़रमा दी। अगर आप वोह सब कुछ जो ज़मीनमें है ख़र्च कर डालते तो (उन तमाम माद्दी वसाइल से) भी आप उनके दिलोंमें (येह) उल्फ़त पैदा न कर सक्ते लेकिन अल्लाहने उनके दरमियान (एक रूहानी रिश्ते से) महब्बत पैदा फ़रमा दी। बेशक वोह बड़े ग़ल्बेवाला हिक्मतवाला है।

وَ اَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۳﴾

64. ऐ नबी (ए मुअ़ज़्ज़म!) आपकेलिए अल्लाह काफ़ी है और वोह मुसलमान जिन्हों ने आपकी पैरवी इख़्तियार कर ली।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۴﴾ ع ۸ ۶ ۴

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. ऐ नबी(ए मुकर्रम!) आप ईमानवालों को जिहाद की तरग़ीब दें (या'नी हक़ की ख़ातिर लड़ने पर आमादह करें), अगर तुम में से (जंग में) बीस (20) साबित क़दम रेहनेवाले हों तो वोह दो सौ (200) (कुफ़्फ़ार) पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में से (एक) सौ (साबित क़दम) होंगे तो काफ़िरों में से (एक) हज़ार पर ग़ालिब आएंगे इस वजह से कि वोह (आख़िरत और उसकेअज्रे अ़ज़ीम की) समझ नहीं रखते (सो वोह इस क़दर जज़्बा व शौक़ से नहीं लड़ सक्ते जिस क़दर वोह मोमिन जो अपनी जानों का जन्नत और अल्लाह की रज़ा के इ़वज़ सौदा कर चुकेहैं)।

اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. अब अल्लाहने तुमसे (अपने हुक्म का बोझ) हल्का कर दिया उसे मा'लूम है कि तुम में (किसी क़दर) कमज़ोरी है सो (अब तख़्फ़ीफ़ के बाद हुक्म येह है कि) अगर तुम में से (एक) सौ (आदमी) साबित क़दम रेहने वाले हों (तो) वोह दो सौ (कुफ़्फ़ार) पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में से (एक) हज़ार हों तो वोह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है। (येह मोमिनों के लिए हदफ़ है कि मैदाने जिहाद में उनके जज़्बए ईमानी का असर कम से कम येह होना चाहिए)।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾

67. किसी नबी को येह सज़ावार नहीं कि उसके लिए (काफ़िर) क़ैदी हों जब तक कि वोह ज़मीनमें उन (हरबी काफ़िरों) का अच्छी तरह ख़ून न बहा ले। तुम लोग दुनिया का मालो अस्बाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत की (भलाई) चाहता है, और अल्लाह ख़ूब ग़ालिब हिक्मतवाला है।

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾

68. अगर अल्लाहकी तरफ़से पहले ही (मुआ़फ़ी का हुक्म) लिखा हुआ न होता तो यक़ीनन तुम उस (माले फ़िदया के बारे) में जो तुम ने (बद्र के क़ैदियों से) हासिल किया था बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता।

فَكُلُوۡا مِمَّا غَنِمۡتُمۡ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّ
اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۶۹﴾ ع ٩ ٥

69. सो तुम उसमें से खाओ जो ह़लाल, पाकीज़ा माले ग़नीमत तुमने पाया है और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّمَنۡ فِىۡۤ اَيۡدِيۡكُمۡ
مِّنَ الۡاَسۡرٰٓى ۙ اِنۡ يَّعۡلَمِ اللّٰهُ فِىۡ
قُلُوۡبِكُمۡ خَيۡرًا يُّؤۡتِكُمۡ خَيۡرًا مِّمَّاۤ
اُخِذَ مِنۡكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَـكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۷۰﴾

70. ऐ नबी! आप उनसे जो आपके हाथों में क़ैदी हैं फ़रमा दीजिए : अगर अल्लाहने तुम्हारे दिलों में भलाई जान ली तो तुम्हें इस (माल) से बेहतर अ़ता फ़रमाएगा जो (फ़िदये में) तुमसे लिया जा चुका है और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَاِنۡ يُّرِيۡدُوۡا خِيَانَـتَكَ فَقَدۡ خَانُوا
اللّٰهَ مِنۡ قَبۡلُ فَاَمۡكَنَ مِنۡهُمۡ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۷۱﴾

71.और (ऐ मह़बूब!) अगर वोह आपसे ख़यानत करना चाहें तो यक़ीनन वोह इससे क़ब्ल (भी) अल्लाह से ख़यानत कर चुके हैं सो (इसी वजह से) उसने उनमें से बा'ज़ को (आपकी) क़ुदरत में दे दिया, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला हिक्मतवाला है।

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَهَاجَرُوۡا وَ
جٰهَدُوۡا بِاَمۡوَالِهِمۡ وَاَنۡفُسِهِمۡ فِىۡ
سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَالَّذِيۡنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوۡۤا
اُولٰۤـئِكَ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ ؕ وَ
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَلَمۡ يُهَاجِرُوۡا مَا لَـكُمۡ
مِّنۡ وَّلَايَتِهِمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ حَتّٰى
يُهَاجِرُوۡا ۚ وَاِنِ اسۡتَـنۡصَرُوۡكُمۡ فِى
الدِّيۡنِ فَعَلَيۡكُمُ النَّصۡرُ اِلَّا عَلٰى
قَوۡمٍۢ بَيۡنَكُمۡ وَبَيۡنَهُمۡ مِّيۡثَاقٌ ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ﴿۷۲﴾

72. बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (अल्लाहके लिए) वतन छोड़ दिए और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राहमें जिहाद किया और जिन लोगोंने (मुहाजिरीन को) जगह दी और (उनकी) मदद की वोही लोग एक दूसरे के वारिस हैं, और जो लोग ईमान लाए (मगर) उन्होंने (अल्लाहके लिए) घरबार न छोड़े तो तुम्हें उनकी दोस्ती से कोई सरोकार नहीं यहां तककि वोह हिजरत करें और अगर वोह दीन (के मुआ़मलात) में तुमसे मदद चाहें तो तुम पर (उनकी) मदद करना वाजिब है मगर उस क़ौम के मुक़ाबले में (मदद न करना) कि तुम्हारे और उनके दरमियान (सुल्ह़ो अम्न का) मुआ़हिदा हो, और अल्लाह उन कामों को जो तुम कर रहे हो ख़ूब देखनेवाला है।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي
الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾
وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا
وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ
حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾
وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا
وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ
وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾ ع ٦

73. और जो लोग काफ़िर हैं वोह एक दूसरे के मददगार हैं, (ऐ मुसमानो!) अगर तुम (एक दूसरे के साथ) ऐसा (तआ़वुन और मददो नुसरत) नहीं करोगे तो ज़मीनमें (ग़ल्बए कुफ़्रो बातिल का) फ़ितना और बड़ा फ़साद बपा हो जाएगा।

74. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाहकी राह में जिहाद किया और जिन लोगोंने (राहे ख़ुदा में घरबार और वतन क़ुरबान कर देनेवालों को) जगह दी और (उनकी) मदद की, वोही लोग ह़क़ीक़त में सच्चे मुसलमान हैं, उनही के लिए बख़्शिश और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है।

75. और जो लोग उसके बाद ईमान लाए और उन्होंने राहे ह़क़में (क़ुरबानी देते हुए) घरबार छोड़ दिए और तुम्हारे साथ मिल कर जिहाद किया तो वोह लोग (भी) तुम ही में से हैं, और रिश्तेदार अल्लाह की किताबमें (सिला रह्मी और विरासत के लिहाज़ से) एक दूसरे के ज़ियादा ह़क़दार हैं, बेशक अल्लाह हर चीज़को ख़ूब जाननेवाला है।

आयातुहा 129 | 9 सूरतुत तौबति मदनिय्यतुन 113 | रुकूआ़तुहा 16

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَى
الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾ ؕ

فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ
وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾
وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَى

1. अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ)की तरफ़ से बेज़ारी (व दस्त बर्दारी) का ए'लान है उन मुशरिक लोगों की तरफ़ जिनसे तुमने (सुल्ह़ो अम्न का) मुआ़हिदा किया था (और वोह अपने अ़हद पर क़ाइम न रहे थे)।

2. पस (ऐ मुशरिको!) तुम ज़मीनमें चार माह (तक) घूम फिर लो (उस मोहलत के इख़्तिताम पर तुम्हे जंग का सामना करना होगा) और जान लो कि तुम अल्लाह को हरगिज़ आ़जिज़ नहीं कर सक्ते और बेशक अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करनेवाला है।

3. (येह आयात) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ)की

النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ
اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ
وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۳﴾

जानिबसे तमाम लोगों की तरफ़ ह़ज्जे अक्बर के दिन ए'लाने (आ़म) है कि अल्लाह मुशरिकों से बेज़ार है और उसका रसूल(ﷺ)भी (उनसे बरी-उज़्-ज़िम्मा है), पस (ऐ मुशरिको!) अगर तुम तौबा कर लो तो वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है और अगर तुमने रूगर्दानी की तो जान लो कि तुम हरगिज़ अल्लाह को आ़जिज़ न कर सकोगे, और (ऐ हबीब!) आप काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दें।

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا
وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا
اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۴﴾

4. सिवाए उन मुशरिकों के जिनसे तुमने मुआ़हिदा किया था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ(अपने अ़हद को पूरा करने में) कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले पर किसी की मदद(या पुश्त पनाही) की सो तुम उनके अ़हद को उनकी मुक़र्ररह मुद्दत तक उनके साथ पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद फ़रमाता है।

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَ
خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا
لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا
سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾

5.फिर जब हुर्मतवाले महीने गुज़र जाएं तो तुम (ह़स्बे ए'लान) मुशरिकों को क़त्ल कर दो जहां कहीं भी तुम उनको पाओ और उन्हें गिरफ़्तार कर लो और उन्हें क़ैद कर दो और उन्हें (पकड़ने और घेरने के लिए) हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो, पस अगर वोह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करने लगें तो उनका रास्ता छोड़ दो। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَ اِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ

6. और अगर मुशरिकों में से कोई भी आपसे पनाह का ख़्वास्तगार हो तो उसे पनाह दे दें ता आं कि वोह अल्लाहका

اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٦ ع

कलाम सुने फिर आप उसे उसकी जाए अम्न तक पहुंचा दें, येह इस लिए कि वोह लोग (ह़क़ का) इ़ल्म नहीं रखते।

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ
عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيْنَ
عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا
اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧

7. (भला) मुशरिकों के लिए अल्लाह के हां और उसके रसूल (ﷺ) के हां कोई अ़हद क्यों कर हो सक्ता है सिवाए उन लोगों के जिनसे तुमने मस्जिदे ह़रामके पास (हुदैबिया में) मुआ़हिदा किया है सो जब तक वोह तुम्हारे साथ (अ़हद पर) क़ाइम रहें तुम उनके साथ क़ाइम रहो। बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद फ़रमाता है।

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا
يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ
يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى
قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨ ۚ

8. (भला उनसे अ़हद की पासदारी की तवक़्क़ो') क्यों कर हो, उनका ह़ाल तो येह है कि अगर तुम पर ग़ल्बा पा जाएं तो न तुम्हारे ह़क़में किसी क़राबत का लिहाज़ करें और न किसी अ़हद का, वोह तुम्हें अपने मुंहसे तो राज़ी रखते हैं और उनके दिल (उन बातों से) इन्कार करते हैं और उन में से अक्सर अ़हद शिकन हैं।

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا
فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩

9. उन्होंने आयाते इलाही के बदले (दुन्यवी मफ़ाद की) थोड़ी सी क़ीमत ह़ासिल कर ली फिर उस (के दीन) की राह से (लोगों को) रोकने लगे, बेशक बहुत ही बुरा काम है जो वोह करते रेहते हैं।

لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا
ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝١٠

10. न वोह किसी मुसलमान के ह़क़ में क़राबत का लिहाज़ करते हैं और न अ़हद का, और वोही लोग (सरकशी में) ह़दसे बढ़नेवाले हैं।

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا
الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ
وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝١١

11. फिर (भी) अगर वोह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करने लगें तो (वोह) दीनमें तुम्हारे भाई हैं, और हम (अपनी) आयतें उन लोगों के लिए तफ़्सील से बयान करते हैं जो इ़ल्मो दानिश रखते हैं।

وَ اِنۡ نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ عَهۡدِهِمۡ وَطَعَنُوۡا فِىۡ دِيۡنِكُمۡ فَقَاتِلُوۡۤا اَئِمَّةَ الۡكُفۡرِ ۙ اِنَّهُمۡ لَاۤ اَيۡمَانَ لَهُمۡ لَعَلَّهُمۡ يَنۡتَهُوۡنَ ﴿۱۲﴾

12. और अगर वोह अपने अ़हद के बाद अपनी क़स्में तोड़ दें और तुम्हारे दीन में ता'ना ज़नी करें तो तुम (उन) कुफ़्र के सरग़नों से जंग करो बेशक उनकी क़स्मों का कोई ए'तिबार नहीं ताकि वोह (अपनी फ़ित्ना परवरी से) बाज़ आ जाएं।

اَلَا تُقَاتِلُوۡنَ قَوۡمًا نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ وَهَمُّوۡا بِاِخۡرَاجِ الرَّسُوۡلِ وَ هُمۡ بَدَءُوۡكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخۡشَوۡنَهُمۡ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنۡ تَخۡشَوۡهُ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۳﴾

13. क्या तुम ऐसी क़ौम से जंग नहीं करोगे जिन्होंने अपनी क़स्में तोड़ डालीं और रसूल (ﷺ) को जिला वतन करने का इरादा किया ह़ालांकि पहली मर्तबा उन्होंने तुमसे (अ़हद शिक्नी और जंग की) इब्तिदा की, क्या तुम उनसे डरते हो जबकि अल्लाह ज़ियादा ह़क़दार है कि तुम उससे डरो बशर्ते कि तुम मोमिन हो।

قَاتِلُوۡهُمۡ يُعَذِّبۡهُمُ اللّٰهُ بِاَيۡدِيۡكُمۡ وَيُخۡزِهِمۡ وَيَنۡصُرۡكُمۡ عَلَيۡهِمۡ وَ يَشۡفِ صُدُوۡرَ قَوۡمٍ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۙ﴿۱۴﴾

14. तुम उनसे जंग करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें अ़ज़ाब देगा और उन्हें रुस्वा करेगा और उन (के मुक़ाबले) पर तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और ईमानवालों के सीनों को शिफ़ा बख़्शेगा।

وَيُذۡهِبۡ غَيۡظَ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ وَ يَتُوۡبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۱۵﴾

15. और उनके दिलों का ग़मो ग़ुस्सा दूर फ़रमाएगा और जिसकी चाहेगा तौबा क़ुबूल फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़े इ़ल्मवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تُتۡرَكُوۡا وَ لَمَّا يَعۡلَمِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ جٰهَدُوۡا مِنۡكُمۡ وَلَمۡ يَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوۡلِهٖ وَلَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَلِيۡجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ ع ۲ ۱۰ ۸

16. क्या तुम येह समझते हो कि तुम (मसाइबो मुश्किलात से गुज़रे बिग़ैर यूं ही) छोड़ दिए जाओगे ह़ालांकि (अभी) अल्लाहने ऐसे लोगों को मु-त-मय्यिज़ नहीं फ़रमाया जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है और (जिन्हों ने) अल्लाह के सिवा और उसके रसूल(ﷺ)के सिवा और अह्ले ईमान के सिवा (किसी को) मेहरमे राज़ नहीं बनाया, और अल्लाह उन कामों से ख़ूब आगाह है जो तुम करते हो।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا
مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ
وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾

17. मुशरिकों के लिए येह रवा नहीं कि वोह अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें दर आं हाली कि वोह ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं, उन लोगों के तमाम आ'माल बातिल हो चुके हैं और वोह हमेशा दोज़ख़ ही में रेहने वाले हैं।

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ
فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ
الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾

18. अल्लाहकी मस्जिदें सिर्फ़वोही आबाद कर सक्ता है जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया और उसने नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा (किसी से) न डरा। सो उम्मीद है कि येही लोग हिदायत पानेवालों में हो जाएंगे।

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

19. क्या तुमने (महज़) ह़ाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे ह़रामकी आबादी व मरम्मत का बंदोबस्त करने (के अ़मल) को उस शख़्स के (आ'माल) के बराबर क़रार दे रखा है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान ले आया और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया? येह लोग अल्लाहके हुज़ूर बराबर नहीं हो सक्ते, और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

وقف لازم

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ
اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राहमें अपने अम्वाल और अपनी जानों से जिहाद करते रहे वोह अल्लाह की बारगाह में दर्जे के लिहाज़ से बहुत बड़े हैं, और वोही लोग ही मुराद को पहुंचे हुए हैं।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ
رِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ
مُّقِيْمٌ ۙ﴿٢١﴾

21. उनका रब उन्हें अपनी जानिब से रह़्मत की और (अपनी) रज़ा की और (उन) जन्नतोंकी ख़ुशख़बरी देता है जिनमें उनके लिए दाइमी ने'मतें हैं।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

22. (वोह) उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا
اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ
اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَ
مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. ऐ ईमानवालो! तुम अपने बाप(दादा) और भाइयों को भी दोस्त न बनाओ अगर वोह ईमान पर कुफ़्र को महबूब रखते हों, और तुम में से जो शख़्स भी उन्हें दोस्त रखेगा सो वोही ज़ालिम हैं।

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ
وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ
وَ اَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ
تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا
حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ ع ٣ ٨ ٩

24. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आप फ़रमा दें : अगर तुम्हारे बाप(दादा) और तुम्हारे बेटे(बेटियां) और तुम्हारे भाई (बहनें) और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे (दीगर) रिश्तेदार और तुम्हारे अम्वाल जो तुमने (मेहनत से) कमाए और तिजारतो कारोबार जिसके नुक़्सान से तुम डरते रेहते हो और वोह मकानात जिन्हें तुम पसंद करते हो, तुम्हारे नज़्दीक अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और उसकी राहमें जिहाद से ज़ियादा महबूब हैं तो फिर इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्मे (अ़ज़ाब) ले आए। और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ
كَثِيْرَةٍ ۙ وَّ يَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ
اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
شَيْـًٔا وَّ ضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا
رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ج

25.बेशक अल्लाहने बहुतसे मुक़ामातमें तुम्हारी मदद फ़रमाई और (ख़ुसूसन) हुनैन के दिन जब तुम्हारी (अफ़रादी कुव्वत की) कसरत ने तुम्हें नाज़ां बना दिया था फिर वोह (कसरत) तुम्हें कुछ भी नफ़ा' न दे सकी और ज़मीन बावजूद इसके कि वोह फ़राख़ी रखती थी, तुम पर तंग हो गई चुनान्चे तुम पीठ दिखाते हुए फिर गए।

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ
جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۗ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

26. फिर अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) पर और ईमानवालों पर अपनी तस्कीन (रह़्मत) नाज़िल फ़रमाई और उसने (मलाइका के ऐसे) लश्कर उतारे जिन्हें तुम न देख सके और उसने उन लोगों को अ़ज़ाब दिया जो कुफ़्र कर रहे थे, और येही काफ़िरों की सज़ा है।

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى
مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾

27. फिर अल्लाह उसके बाद भी जिसकी चाहता है तौबा कु़बूल फ़रमाता है (या'नी उसे तौफ़ीके़ इस्लाम और तवज्जुहे रह़्मत से नवाज़ता है), और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ
نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ
بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً
فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ
شَآءَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

28. ऐ ईमानवालो! मुशरिकीन तो सरापा नजासत हैं सो वोह अपने इस साल के बाद (या'नी फ़त्हे मक्का के बाद हिजरी 9 से) मस्जिदे ह़राम के क़रीब न आने पाएं और अगर तुम्हें (तिजारत में कमी के बाइस) मुफ़्लिसी का डर है तो (घबराओ नहीं) अ़नक़रीब अल्लाह अगर चाहेगा तो तुम्हें अपने फ़ज़्लसे मालदार कर देगा, बेशक अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا
بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا
حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ
دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ
صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ ع

29. (ऐ मुसलमानो! तुम अहले किताब में से उन लोगों के साथ (भी जवाबी) जंग करो (जिन्हों ने तुम्हारे साथ किए हुए मुआ़हिदए अम्न को तोड़ कर, जिला वतनी के बावुजूद जंगे अह़्ज़ाब में मदीना पर ह़मला आवर कुफ़्फ़ारे मक्का की अफ़्वाज की भरपूर मदद की और अब भी तुम्हारे ख़िलाफ़ तमाम मुम्किना साज़िशें जारी रखखे हुए हैं) जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं न यौमे आख़िरत पर और न उन चीज़ों को ह़राम जानते हैं जिन्हें अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ) ने ह़राम क़रार दिया है और न ही दीने ह़क़ (या'नी इस्लाम) इख़्तियार करते हैं, यहां तक कि वोह)हुक्मे इस्लाम के सामने) ताबेओ़ मग़लूब हो कर अपने हाथ से ख़िराज अदा करें।

☆ (جنہوں نے تمہارے ساتھ کیے ہوئے معاہدۂ امن کو توڑ کر، جلا وطنی کے باوجود جنگِ احزاب میں مدینہ پر حملہ آور کفارِ مکہ کی افواج کی بھرپور مدد کی اور اب بھی تمہارے خلاف تمام ممکنہ سازشیں جاری رکھے ہوئے ہیں)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ِۨابْنُ اللّٰهِ وَ
قَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۗ
ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ

30. और यहूदने कहा : उ़ज़ैर (عليه السلام)अल्लाह के बैटे हैं और नसाराने कहा : मसीह़ (عليه السلام)अल्लाहके बेटे हैं। येह उनका (लग़्व) क़ौल है जो अपने मुँह से निकालते हैं।

قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

येह उन लोगों के क़ौल से मुशाबिहत (इख़्तियार) करते हैं जो (उनसे) पेहले कुफ़्र कर चुके हैं, अल्लाह उन्हें हलाक करे येह कहां बेहके फिरते हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَ مَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

31. उन्होंने अल्लाहके सिवा अपने आ़लिमों और ज़ाहिदों को रब बना लिया था और मरयम के बेटे मसीह़ (عليه السلام) को (भी) ह़ालांकि उन्हें बजुज़ इसके (कोई) हुक्म नहीं दिया गया था कि वोह अकेले एक (ही) मा'बूद की इ़बादत करें जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह उनसे पाक है जिन्हें येह शरीक ठेहराते हैं।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. वोह चाहते हैं कि अल्लाहका नूर अपनी फूंकों से बुझा दें और अल्लाह (येह बात)क़ुबूल नहीं फ़रमाता मगर येह (चाहता है) कि वोह अपने नूरको कमाल तक पहुंचा दे अगरचे कुफ़्फ़ार (उसे) नापसंद ही करें।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. वोही (अल्लाह) है जिसने अपने रसूल (ﷺ)को हिदायत और दीने ह़क़ के साथ भेजा ताकि इस (रसूल ﷺ) को हर दीन (वाले) पर ग़ालिब कर दे अगरचे मुशरिकीन को बुरा लगे।

النصف

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَ الرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ﴿٣٤﴾

34. ऐ ईमानवालो! बेशक (अह्ले किताब के) अक्सर उ़लमा और दुर्वेश लोगों के माल नाह़क़ (तरीक़े से) खाते हैं और अल्लाहकी राहसे रोकते हैं (या'नी लोगों के माल से अपनी तिजोरियां भरते हैं और दीने ह़क़ की तक़्विय्यतो इशाअ़त पर ख़र्च किए जानेसे रोकते हैं) और जो लोग सोना और चाँदी का ज़ख़ीरा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दें।

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. जिस दिन उस (सोने,चाँदी और माल) पर दोज़ख़ की आग में ताप दी जाएगी फिर उस (तपे हुए माल) से उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएंगी, (और उनसे कहा जाएगा) कि येह वोही (माल) है जो तुमने अपनी जानों (के मफ़ाद) के लिए जमा' किया था सो तुम (उस मालका) मज़ा चखो जिसे तुम जमा' करते रहे थे।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾

36. बेशक अल्लाह के नज़दीक महीनों की गिन्ती अल्लाह की किताब (या'नी नविश्तए क़ुदरत) में बारह महीने (लिखी) है जिस दिनसे उसने आस्मानों और ज़मीन (के निज़ाम) को पैदा फ़रमाया था उनमें से चार महीने (रज्जब, जिल का'दह, जिल हिज्जा और मुहर्रम) हुर्मतवाले हैं। येही सीधा दीन है सो तुम उन महीनों में (अज़ ख़ुद जंगो क़िताल में मुलव्विस हो कर) अपनी जानों पर जुल्म न करना और तुम (भी) तमाम मुशरिकीनसे उसी तरह (जवाबी) जंग किया करो जिस तरह वोह सब के सब (इकठ्ठे हो कर) तुमसे जंग करते हैं, और जान लो कि बेशक अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

اِنَّمَا النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ يُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ ع ۵ ۸ ۱۱

37. (हुर्मतवाले महीनों को) आगे पीछे हटा देना महज़ कुफ़्रमें ज़ियादती है इससे वोह काफ़िर लोग बेहकाए जाते हैं जो उसे एक साल हलाल गर्दानते हैं और दूसरे साल उसे हराम ठेहरा लेते हैं ताकि उन (महीनों) का शुमार पूरा कर दें जिन्हें अल्लाहने हुर्मत बख़्शी है और उस (महीने) को हलाल (भी) कर दें जिसे अल्लाहने हराम फ़रमाया है। उनके लिए उनके बुरे आ'माल खुशनुमा बना दिए गए हैं, और अल्लाह काफ़िरों के गिरोह को हिदायत नहीं फ़रमाता।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۳۸﴾

38. ऐ ईमानवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि तुम अल्लाहकी राह में (जिहाद के लिए) निक्लो तो तुम बोझल हो कर ज़मीन (की माद्दी-व-सिफ़्ली दुनिया) की तरफ़ झुक जाते हो, क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी से राज़ी हो गए हो? सो आख़िरत (के मुक़ाबले) में दुन्यवी ज़िन्दगीका साज़ो सामान कुछ भी नहीं मगर बहुत ही कम (हैसिय्यत रखता है)।

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾

39. अगर तुम (जिहाद के लिए) न निकलोगे तो वोह तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तिला फ़रमाएगा और तुम्हारी जगह (किसी) और क़ौमको ले आएगा और तुम उसे कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ी क़ुदरत रखता है।

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۴۰﴾

40. अगर तुम उनकी (या'नी रसूलुल्लाह ﷺ की ग़ल्बए इस्लामकी जिद्दो जहदमें) मदद न करोगे (तो क्या हुवा) सो बेशक अल्लाहने उनको (उस वक़्त भी) मददसे नवाज़ा था जब काफ़िरोंने उन्हें (वतन मक्कासे) निकाल दिया था दर आं हालीकि वोह दो (हिजरत करनेवालों) में से दूसरे थे जबकि दोनों (रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बकर सिद्दीक़ ؓ)ग़ारे (सौर)में थे जब वोह अपने साथी (अबू बकर सिद्दीक़ ؓ)से फ़रमा रहे थे ग़म ज़दह न हो बेशक अल्लाह हमारे साथ है पस अल्लाहने उन पर अपनी तस्कीन नाज़िल फ़रमा दी और उन्हें (फ़रिश्तों के) ऐसे लश्करों के ज़रीए क़ुव्वत बख़्शी जिन्हें तुम न देख सके और उसने काफ़िरों की बातको पस्तो फ़रोतर कर दिया, और अल्लाहका फ़रमान तो (हमेशा) बुलन्दो बाला ही है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मतवाला है।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا
بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

41. तुम हल्के और गरांबार (हर हाल में) निकल खड़े हो और अपने मालो जान से अल्लाहकी राह में जिहाद करो, येह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम (ह़क़ीक़त) आशना हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا
قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ
عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ
بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ
يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ ع

42. अगर माले (ग़नीमत) क़रीबुल ह़ुसूल होता और (जिहाद का) सफ़र मुतवस्सितो आसान तो वोह (मुनाफ़िक़ीन) यक़ीनन आपके पीछे चल पड़ते लेकिन (वोह) पुर मशक़्क़त मुसाफ़त उन्हें बहुत दूर दिखाई दी, और (अब) वोह अ़नक़रीब अल्लाहकी क़स्में खाएंगे कि अगर हम में इस्तिताअ़त होती तो ज़रूर तुम्हारे साथ निकल खड़े होते वोह (इन झूटी बातों से) अपने आप को (मज़ीद) हलाकत में डाल रहे हैं और अल्लाह जानता है कि वोह वाक़ई झूटे हैं।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى
يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ
تَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾

43. अल्लाह आप को सलामत (और बा इ़ज़्ज़तो आ़फ़िय्यत) रखे आपने उन्हें रुख़्सत (ही) क्यों दी (कि वोह शरीके जंग न हों) यहां तक कि वोह लोग (भी) आपके लिए ज़ाहिर हो जाते जो सच बोल रहे थे और आप झूट बोलनेवालों को (भी) मा'लूम फ़रमा लेते।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾

44. वोह लोग जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं आप से (इस बातकी) रुख़्सत तलब नहीं करेंगे कि वोह अपने मालो जानसे जिहाद (न) करें, और अल्लाह परहेज़गारों को खूब जानता है।

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ
ارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ

45. आप से (जिहाद में शरीक न होने की) रुख़्सत सिर्फ़ वोही लोग चाहेंगे जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और उन के दिल शक में पड़े हुए हैं सो

वोह अपने शक में हैरानो सरगर्दां हैं।

يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾

46. अगर उन्होंने (वाक़ई जिहादके लिए) निकलने का इरादा किया होता तो वोह उसके लिए (कुछ न कुछ) सामान तो ज़रूर मुहय्या कर लेते लेकिन (ह़क़ीक़त येह है कि उनके किज़्बो मुनाफ़िक़त के बाइस) अल्लाह ने उनका (जिहाद के लिए) खड़े होना (ही) ना पसन्द फ़रमाया सो उसने उन्हें (वहीं) रोक दिया और उनसे केह दिया गया कि तुम (जिहाद से जी चुरा कर) बैठ रेहनेवालों के साथ बैठे रहो।

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

47. अगर वोह तुम में (शामिल हो कर) निकल खड़े होते तो तुम्हारे लिए मह़ज़ शर्रो फ़साद ही बढ़ाते और तुम्हारे दरमियान (बिगाड़ पैदा करने के लिए) दौड़ घूप करते वोह तुम्हारे अंदर फ़ित्ना बपा करना चाहते हैं और तुम में (अब भी) उन के (बा'ज़) जासूस मौजूद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاْاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

48. दर ह़क़ीक़त वोह पहले भी फ़ितना पर्दाज़ी में कोशां रहे हैं और आप के काम उलट पुलट करने की तदबीरें करते रहे हैं यहां तक कि ह़क़ आ पहुंचा और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हो गया और वोह (उसे) नापसंद ही करते रहे।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

49. और उन में से वोह शख़्स (भी) है जो केहता है कि आप मुझे इजाज़त दे दीजिए (कि मैं जिहाद पर जाने की बजाए घर ठेहरा रहूं) और मुझे फ़ित्ने में न डालिए, सुन लो! कि वोह फ़ित्ने में (तो ख़ुद ही) गिर पड़े हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

50. अगर आपको कोई भलाई (या आसाइश) पहुंचती है (तो) वोह उन्हें बुरी लगती है और अगर आपको मुसीबत(या तक्लीफ़) पहुंचती है (तो) केहते हैं कि हमने तो पहले से ही अपने काम (में एह़तियात) को इख़्तियार

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا

وَّهُمْ فٰرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾

कर लिया था और खुशियां मनाते हुए पलटते हैं।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

51. (ऐ ह़बीब!) आप फ़रमा दीजिए कि हमें हरगिज़ (कुछ) नहीं पहुंचेगा मगर वोही कुछ जो अल्लाहने हमारे लिए लिख दिया है, वोही हमारा कारसाज़ है और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. आप फ़रमा दें : क्या तुम हमारे लिए ह़क़ में दो भलाइयों (या'नी फ़त्ह़ और शहादत)में से एक ही का इन्तिज़ार कर रहे हो (कि हम शहीद होते हैं या ग़ाज़ी बन कर लौटते हैं) और हम तुम्हारे ह़क़ में (तुम्हारी मुनाफ़िक़त के बाइस) इस बातका इन्तिज़ार कर रहे हैं कि अल्लाह अपनी बारगाह से तुम्हें (ख़ुसूसी) अ़ज़ाब पहुंचाता है या हमारे हाथों से। सो तुम (भी) इन्तिज़ार करो हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं (कि किस का इन्तिज़ार नतीजा ख़ेज़ है)।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾

53. फ़रमा दीजिए : तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से तुम से हरगिज़ वोह (माल) क़ुबूल नहीं किया जाएगा, बेशक तुम नाफ़रमान लोग हो।

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. और उनसे उनके नफ़क़ात (या'नी सदक़ात) के क़ुबूल किए जाने में कोई (और)चीज़ उन्हें माने' नहीं हुई सिवाए इसके कि वोह अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के मुन्किर हैं और वोह नमाज़ की अदाएगी के लिए नहीं आते मगर काहिली व बे रग़बती के साथ और वोह (अल्लाह की राहमें) ख़र्च (भी) नहीं करते मगर इस ह़ालमें कि वोह नाख़ुश होते हैं।

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ

55. सो आपको न (तो) उनके अम्वाल तअ़ज्जुब में डालें और न ही उनकी औलाद। बस अल्लाह तो येह चाहता है कि उन्हें उन्ही (चीज़ों) की वजह से दुन्यवी ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे और उनकी जानें इस ह़ालमें निक्लें

وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

कि वोह काफ़िर हों।

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَ
مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَ لٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. और वोह (इस क़दर बुज़दिल हैं कि)अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि वोह तुम ही में से हैं हालां कि वोह तुम में से नहीं लेकिन वोह ऐसे लोग हैं जो (अपने निफ़ाक़ के ज़ाहिर होने और उसके अंजाम से) डरते हैं (इस लिए वोह बसूरते तक़िय्या अपना मुसलमान होना ज़ाहिर करते हैं)।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ
مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَ هُمْ
يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. (उनकी कैफ़िय्यत येह है कि) अगर वोह कोई पनाहगाह या ग़ार या सुरंग पा लें तो इन्तिहाई तेज़ी से भागते हुए उस की तरफ़ पलट जाएं (और आपके साथ एक लम्हा भी न रहें मगर इस वक़्त वोह मजबूर हैं इस लिए झूटी वफ़ादारी जतलाते हैं)।

وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ
فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَ اِنْ لَّمْ
يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. और उन्हीं में से बा'ज़ ऐसे हैं जो सदक़ात (की तक़्सीम) में आप पर ता'ना ज़नी करते हैं, फिर अगर उन्हें इन(सदक़ात)में से कुछ दे दिया जाए तो वोह राज़ी हो जाएं और अगर उन्हें इस में से कुछ न दिया जाए तो वोह फ़ौरन ख़फ़ा हो जाते हैं।

وَ لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا
اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ
وَ رَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ
رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع

59. और क्या ही अच्छा होता अगर वोह लोग इस पर राज़ी हो जाते जो उनको अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ने अ़ता फ़रमाया था और केहते कि हमें अल्लाह काफ़ी है। अ़नक़रीब हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उस का रसूल (ﷺ मज़ीद) अ़ता फ़रमाएगा। बेशक हम अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं (और रसूल (ﷺ) उसी का वासता और वसीला हैं, उस का देना भी अल्लाह ही का देना है। अगर येह अ़क़ीदह रखते और ता'नाज़नी न करते तो येह बेहतर होता)।

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَ
الْمَسٰكِيْنِ وَ الْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا

60. बेशक सदक़ात (ज़कात) महज़ ग़रीबों और मोहूताजों और उनकी वसूली पर मुक़र्रर किए गए कारकुनों और ऐसे लोगों के लिए हैं जिनके दिलों में इस्लाम की उल्फ़त पैदा करना मक़्सूद हो और (मज़ीद

وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَ
الْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾

येह कि) इन्सानी गरदनों को (गुलामी की ज़िन्दगी से) आज़ाद कराने में और क़र्ज़दारों के बोझ उतारने में और अल्लाह की राहमें (जिहाद करनेवालों पर) और मुसाफ़िरों पर(ज़कात का ख़र्च किया जाना हक़ है)। येह (सब) अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ किया गया है और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ
وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ
اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ
اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

الثلثة

61. और उन (मुनाफ़िक़ों)में से वोह लोग भी हैं जो नबी(ए मुकर्रम ﷺ) को ईज़ा पहुंचाते हैं और केहते हैं वोह तो कान (के कच्चे)हैं। फ़रमा दीजिए : तुम्हारे लिए भलाई के कान हैं वोह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और अह्ले ईमान (की बातों) पर यक़ीन करते हैं और तुम में से जो ईमान ले आए हैं उनके लिए रह्मत हैं, और जो लोग रसूलुल्लाह को (अपनी बद अ़क़ीदगी, बद गुमानी और बदज़बानी के ज़रीए) अज़िय्यत पहुंचाते हैं उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

62. मुसल्मानो! (येह मुनाफ़िक़ीन) तुम्हारे सामने अल्लाह की क़स्में खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी रखें हालांकि अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) ज़ियादह हक़दार है कि उसे राज़ी किया जाए अगर येह लोग ईमानवाले होते (तो येह हक़ीक़त जान लेते और रसूल ﷺ को राज़ी करते, रसूल ﷺ के राज़ी होने से ही अल्लाह राज़ी हो जाता है क्योंकि दोनों की रज़ा एक है)।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا
فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾
يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ

63. क्या वोह नहीं जानते कि जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल (रसूल ﷺ) की मुख़ालिफ़त करता है तो उस के लिए दोज़ख की आग (मुक़र्रर) है जिसमें वोह हमेशा रेहनेवाला है, येह ज़बरदस्त रुस्वाई है।

64. मुनाफ़िक़ीन इस बात से डरते हैं कि मुसल्मानों पर कोई

عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي
قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِءُوا ۚ إِنَّ
اللَّهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾

ऐसी सूरत नाज़िल कर दी जाए जो उन्हें इन बातों से ख़बरदार कर दे जो इन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में (मुख़्फ़ी) हैं। फ़रमा दीजिए: तुम मज़ाक़ करते रहो, बेशक अल्लाह वोह (बात) ज़ाहिर फ़रमानेवाला है जिस से तुम डर रहे हो।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا
نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ
وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦٥﴾

65. और अगर आप उनसे दर्याफ़्त करें तो वोह ज़रूर येही कहेंगे कि हम तो सिर्फ़(सफ़र काटने के लिए) बातचीत और दिललगी करते थे। फ़रमा दीजिए : क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक़ कर रहे थे।

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ
إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ
مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ
كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾ ع

66. (अब) तुम मा'ज़रेत मत करो, बेशक तुम अपने ईमान (के इज़्हार) के बाद काफ़िर हो गए हो, अगर हम तुम में से एक गिरोह को मुआफ़ भी कर दें (तब भी) दूसरे गिरोह को अज़ाब देंगे इस वजह से कि वोह मुजरिम थे।

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ
مِنْ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ
أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ
الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٦٧﴾

وقف لازم

67. मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक दूसरे (की जिन्स) से हैं। येह लोग बुरी बातों का हुक्म देते हैं और अच्छी बातों से रोक्ते हैं और अपने हाथ (अल्लाह की राहमें ख़र्च करने से) बंद रखते हैं, उन्होंने अल्लाह को फ़रामोश कर दिया, तो अल्लाहने उन्हें फ़रामोश कर दिया, बेशक मुनाफ़िक़ीन ही ना फ़रमान हैं।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ
وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ
هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٦٨﴾

68. अल्लाहने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से आतिशे दोज़ख़ का वा'दा फ़रमा रखा है (वोह) उसमें हमेशा रहेंगे, वोह (आग) उन्हें काफ़ी है, और अल्लाहने उन पर ला'नत की है और उनके लिए हमेशा बरक़रार रेहनेवाला अज़ाब है।

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ
مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۚ

69. (ऐ मुनाफ़िक़ो! तुम) उन लोगों की मिस्ल हो जो तुम से पहले थे। वोह तुम से बहुत ज़ियादा ताक़तवर और

فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ
بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَ خُضْتُمْ كَالَّذِيْ
خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

मालो अवलाद में कहीं ज़ियादा बढ़े हुए थे। पस वोह अपने (दुन्यवी) हिस्से से फ़ाइदा उठा चुके सो तुम (भी) अपने हिस्से से (उसी तरह) फ़ाइदा उठा रहे हो जैसे तुम से पहले लोगों ने (लिज़्ज़ते दुन्या के) अपने मुक़र्ररा हिस्से से फ़ाइदा उठाया था नीज़ तुम (भी उसी तरह) बातिलमें दाख़िल और ग़ल्तां हो जैसे वोह बातिल में दाख़िल और ग़ल्तां थे। उन लोगों के आ'माल दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गए और वोही लोग ख़सारे में हैं।

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ
نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۬ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَ
اَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ
اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. क्या उनके पास उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो उनसे पहले थे, क़ौमे नूह़ और आ़द और समूद और क़ौमे इब्राहीम और बाशिन्दगाने मद्यन और उन बस्तियों के मकीन जो उलट दी गईं, उनके पास (भी) उनके रसूल वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए थे (मगर उन्होंने ना फ़रमानी की) पस अल्लाह तो ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वोह (इन्कारे ह़क़ के बाइस) अपने ऊपर ख़ुद ही ज़ुल्म करते थे।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُقِيْمُوْنَ
الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ يُطِيْعُوْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ
اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

71. और अह्ले ईमान मर्द और अह्ले ईमान औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ो मददगार हैं। वोह अच्छी बातों का हुक्म देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त बजा लाते हैं, उन ही लोगों पर अल्लाह अ़नक़रीब रह़म फ़रमाएगा, बेशक अल्लाह बड़ा ग़ालिब बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

72. अल्लाहने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों से जन्नतों का वा'दा फ़रमा लिया है जिन के नीचे से नेहरें बेह रही हैं,

وقف لازم

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ
جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَ رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾ ع ۹ ۶ ۱۵

वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं और ऐसे पाकीज़ा मकानात का भी (वा'दा फरमाया है) जो जन्नत के ख़ास मुक़ाम पर सदा बहार बाग़ात में हैं, और (फिर) अल्लाह की रज़ा और ख़ुशनूदी (इन सब ने'मतों से) बढ़ कर है (जो बड़े अज्र के तौर पर नसीब होगी), येही ज़बरदस्त कामयाबी है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾

73. ऐ नबी(ए मुअ़ज़्ज़म!) आप काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वोह बुरा ठिकाना है।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَ لَقَدْ
قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ
اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا
نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَ
رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا
يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ يَّتَوَلَّوْا
يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي
الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ مَا لَهُمْ فِي
الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾

74. (येह मुनाफ़िक़ीन) अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि उन्होंने (कुछ) नहीं कहा हालांकि उन्होनें यक़ीनन कलिमए कुफ़्र कहा और वोह अपने इस्लाम (को ज़ाहिर करने) के बाद काफ़िर हो गए और उन्होंने (कई अज़िय्यत रसां बातों का) इरादा (भी) किया था जिन्हें वोह न पा सके और वोह (इस्लाम और रसूल ﷺ के अ़मल में से) और किसी चीज़ को ना पसंद न कर सके सिवाए इसके कि उन्हें अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ने अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया था, सो अगर येह (अब भी) तौबा कर लें तो उनके लिए बेहतर है और अगर (इसी तरह) रूगर्दां रहें तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत (दोनों ज़िन्दगियों) में दर्दनाक अ़ज़ाबमें मुब्तिला फ़रमाएगा और उन के लिए ज़मीन में न कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार।

وَ مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ
مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾

75. और उन (मुनाफ़िक़ों) में (बा'ज़) वोह भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अ़हद किया था कि अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से दौलत अ़ता फ़रमाई तो हम ज़रूर (उसकी राह में) ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर नेकूकारों में से हो जाएंगे।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. पस जब उसने उन्हें अपने फ़ज़्ल से (दौलत) बख़्शी (तो) वोह उसमें बुख़्ल करने लगे और वोह (अपने अ़हद से) रूगर्दानी करते हुए फिर गए।

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾

77. पस उसने उनके दिलों में निफ़ाक़ को (उनके अपने बुख़्ल का) अंजाम बना दिया उस दिन तक कि जब वोह उससे मिलेंगे इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह से अपने किए हुए अ़हद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की। और इस वजह से (भी) कि वोह किज़्ब बयानी किया करते थे।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾

78. क्या उन्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह उनके भेद और उनकी सरगोशियां जानता है और येह कि अल्लाह सब ग़ैब की बातों को बहुत खूब जाननेवाला है।

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

79. जो लोग ब.रज़ा व रग़बत ख़ैरात देनेवाले मोमिनों पर (उनके) सदक़ातमें (रियाकारी व मजबूरी का) इल्ज़ाम लगाते हैं और उन (नादार मुसलमानों) पर भी (ऐ़ब लगाते हैं) जो अपनी मेह़नतो मशक़्क़त के सिवा (कुछ ज़ियादा मक़्दूर) नहीं पाते सो येह (उनके जज़्बए इन्फ़ाक़ का भी) मज़ाक़ उड़ाते हैं, अल्लाह उन्हें उनके तमस्ख़ुर की सज़ा देगा और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۗ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾ ع ١٠ ٨ ١٢

80. आप ख़्वाह उन (बद बख़्त, गुस्ताख़ और आपकी शानमें ता'ना ज़नी करनेवाले मुनाफ़िक़ों) के लिए बख़्शिश तलब करें या उनके लिए बख़्शिश तलब न करें, अगर आप (अपनी तबई शफ़्क़त और अ़फ़्वो दरगुज़र की आ़दते करीमाना के पेशे नज़र) उनके लिए सत्तर मर्तबा भी बख़्शिश तलब करें तो भी अल्लाह उन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा, येह इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के साथ कुफ़्र किया है, और अल्लाह ना फ़रमान क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾

81. रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुख़ालिफ़त के बाइस (जिहाद से पीछे) रेह जानेवाले (येह मुनाफ़िक़) अपने बैठ रेहने पर ख़ुश हो रहे हैं वोह इस बातको ना पसंद करते थे कि अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राहमें जिहाद करें और केहते थे कि इस गरमीमें न निक्लो, फरमा दीजिए: दोज़ख की आग सब से ज़ियादा गर्म है, अगर वोह समझते होते (तो क्या ही अच्छा होता)।

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. पस उन्हें चाहिए कि थोड़ा हंसें और ज़ियादा रोएं (क्योंकि आख़िरतमें उन्हें ज़ियादा रोना है) येह उस का बदला है जो वोह कमाते थे।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

83. पस (ऐ ह़बीब!) अगर अल्लाह आपको (गज़्वए तबूक से फ़ारिग़ होने के बाद) उन (मुनाफ़िक़ीन) में से किसी गिरोह की तरफ़ दोबारा वापस ले जाए और वोह आप से (आइन्दा किसी और ग़ज़्वे के मौक़े' पर जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त चाहें तो उनसे फ़रमा दीजिएगा कि (अब) तुम मेरे साथ कभी भी हरगिज़ न निकलना और तुम मेरे साथ हो कर कभी भी हरगिज़ दुश्मन से जंग न करना (क्यों कि) तुम पहली मर्तबा (जिहाद छोड़ कर) पीछे बैठे रेहने से ख़ुश हुए थे सो (अब भी) पीछे बैठे रेह जानेवालों के साथ बैठे रहो।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. और आप कभी भी उन (मुनाफ़िक़ों) में से जो कोई मर जाए उस (के जनाज़े) पर नमाज़ न पढ़ें और न ही आप उस की क़ब्र पर खड़े हों (क्यों कि आप का किसी जगह क़दम रखना भी रह़मतो बरकत का बाइस होता है और येह आप की रह़मतो बरकत के ह़क़दार नहीं हैं)। बेशक उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ)के साथ कुफ़्र किया और वोह ना फ़रमान होने की ह़ालत में ही मर गए।

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي
الدُّنْيَا وَ تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ
كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85. और उनके माल और उनकी औलाद आपको तअ़ज्जुबमें न डालें। अल्लाह फ़क़त येह चाहता है कि इन चीज़ों के ज़रीए उन्हें दुनिया में(भी) अ़ज़ाब दे और उन की जानें इस ह़ाल में निक्लें कि वोह काफ़िर (ही) हों।

وَ اِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ
اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا
نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. और जब कोई (ऐसी) सूरत नाज़िल की जाती है कि तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल (ﷺ)की मइ़य्यत में जिहाद करो तो उनमें से दौलत और ताक़तवाले लोग आप से रुख़्सत चाहते हैं और केहते हैं आप हमें छोड़ दें हम (पीछे) बैठे रेहनेवालों के साथ हो जाएं।

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ
وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾

87. उन्होंने येह पसंद किया कि वोह पीछे रेह जानेवाली औ़रतों, बच्चों और मा'जूरों के साथ हो जाएं और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई है सो वोह कुछ नहीं समझते।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ
وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾

88. लेकिन रसूल (ﷺ) और जो लोग उनके साथ ईमान लाए अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करते हैं और उनही लोगों के लिए सब भलाइयां हैं और वोही लोग मुराद पानेवाले हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ ع ١١ ٩ ١٧

89. अल्लाहने उनके लिए जन्नतें तैयार फ़रमा रखी हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं (वोह) उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, येही बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ
لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا

90.और सह़रा नशीनों में से कुछ बहानासाज़ (मा'ज़ेरत करने के लिए दरबारे रिसालत ﷺ में) आए ताकि उन्हें

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾

(भी) रुख़्सत दे दी जाए, और वोह लोग जिन्होंने (अपने दा'वाए ईमानमें) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से झूट बोला था (जिहाद छोड़ कर पीछे) बैठ रहे, अ़नक़रीब उनमें से उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र किया दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَ لَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿٩١﴾

91. ज़ईफ़ों (कमज़ोरों) पर कोई गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न (ही) ऐसे लोगों पर है जो इस क़दर (वुस्अ़त भी) नहीं पाते जिसे ख़र्च करें जबकि वोह अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के लिए ख़ालिसो मुख़्लिस हो चुके हों, नेकूकारों (या'नी साहिबाने एह़्सान) पर इल्ज़ाम की कोई राह नहीं और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَّ اَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ؕ﴿٩٢﴾

92. और न ऐसे लोगों पर (ता'ना व इल्ज़ाम की राह है) जबकि वोह आपकी ख़िदमतमें (इसलिए) हाज़िर हुए कि आप उन्हें (जिहाद केलिए) सवार करें (क्यों कि उनके पास अपनी कोई सवारी न थी तो) आपने फ़रमाया मैं (भी) कोई (ज़ाइद सवारी) नहीं पाता हूं जिस पर तुम्हें सवार कर सकूं (तो) वोह (आपके इज़्नसे) इस ह़ालत में लौटे कि उनकी आंखें (जिहाद से महरूमी के) ग़म में अश्कबार थीं कि (अफ़्सोस) वोह (इस क़दर) ज़ादे राह नहीं पाते जिसे वोह ख़र्च कर सकें(और शरीके जिहाद हो सकें)।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. (इल्ज़ाम की) राह तो फ़क़त उन लोगों पर है जो आप से रुख़्सत तलब करते हैं हालांकि वोह मालदार हैं, वोह इस बात से ख़ुश हैं कि वोह पीछे रेह जानेवाली औ़रतों और मा'ज़ूरों के साथ रहें और अल्लाहने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, सो वोह जानते ही नहीं(कि ह़क़ीक़ी सूदो ज़ियां क्या है)